Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 3, Issue 1 - 2018

पन्चवर्षीय योजना के अर्न्तगत उत्तर प्रदेश मे कृषि विकास– जनपद इटावा के सन्दर्भ में

डॉ ध्रुव दत्त तिवारी*

प्रस्तावना

आर्थिक विकास का ऐतिहासिक अनुभव और आर्थिक विकास की सैद्धान्तिक व्याख्या, यह स्पष्ट करते हैं कि आर्थिक विकास की प्रारंभिक अवस्था में प्रत्येक अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान होता है। विकसित अर्थ व्यवस्थाओं के विकास अनुभव भी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं। विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के राष्ट्रीय उत्पाद, रोजगार और निर्यात की संरचना में कृषि क्षेत्र का योगदान उद्योग सेवा क्षेत्र की तुलना में अधिक होता है। ऐसी स्थिति में कृषि का पिछडापन सम्पूर्ण अर्थ व्यवस्था को पिछड़ेपन में बनाये रखता है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था के कमजोर वर्ग के लोग जिनमें लघु एवं अतिलघु कृषक और खेत हर मजदूर सम्मिलित है और जिनकी संख्या अपेक्षाकृत अधिक होती है। अधिकांशत गरीबी के दुश्चक्र में फंसे रहते हैं। वे निम्न स्तरीय संतुलन में बने रहते हैं। इनकी जोत का आकार तो छोटा होता है। साथ–साथ इनके पास स्थायी उत्पादक परिसम्पत्ति की कमी होती है। इनकी गरीबी अर्थव्यवस्था के पिछड़ेपन का मुख्य कारण होती है। आज के विभिन्न विकसित देशो का आर्थिक इतिहास यह स्पष्ट करता है कि कृषि विकास ने ही उनके औद्योगिक क्षेत्र के विकास का मार्ग प्रशस्त किया है। कृषि क्षेत्र ने ही उनके परिवहन और गैर कृषि आर्थिक क्रियाओं के लिए भूमिका प्रदान किया है। आज के विकसित पूंजीवादी और समाजवादी अर्थव्यवस्थाओं के विकास के आरंभिक चरण में कृषि ने वहां के गैर कृषि क्षेत्र के विकास हेतु श्रम शक्ति कच्चा पदार्थ, भोज्य सामग्री और पूजी की आपूर्ति किया। इग्लैड में सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में कृषकों ने तकनीकी परिवर्तन द्वारा कृषि विकास का मार्ग अपनाया और इसके आधिक्य को गैर कृषि क्षेत्र के विकास में प्रयोग किया गया।

उद्देश्य

1. अध्ययन क्षेत्र मे कृषि आधरित उद्योगों की वर्तमान स्थिति ज्ञात करना।
2. अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत कृषि आधरित उद्योगों में रोजगार सृजन एव आय सृजन का अध्ययन करना।

साहित्य समीक्षा

शोध विषय से सम्बन्धित साहित्य जो उपलब्ध हुआ है उसमें (1) डॉ0 आर0ए0 चौरसिया द्वारा लिखित पुस्तक 'एग्रो इण्डस्ट्रियल डेवलपमेंट–ए स्टडी' है, इसमें योजनाकाल के पश्चात् भारत में कृषि आधरित औद्योगीकरण के विकास को प्रस्तुत किया गया है। (2) डॉ0 ब्रजेन्द्र नाथ बनर्जी की पुस्तक 'इण्डस्ट्री एग्रीकल्चर एण्ड रूरल डेवलपमेंट' है। इसमें डॉ0 बनर्जी ने यह स्पष्ट किया है कि ग्रामीण विकास में कृषि आधरित उद्योग विशेष महत्त्व रखते हैं। (3) जिला उद्योग केन्द्र द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'औद्योगिक निर्देशिका' है इसमें जिले में कृषि आधरित उद्योगों की स्थिति (रोजगार, पूँजी, उत्पादन) को स्पष्ट किया है।

*सहायक प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, जनता महाविद्यालय, अजितमल, औरया
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र वर्णनात्मक शोध प्रविधि के अन्तर्गत सर्वेक्षाणात्मक अनुसंधान विधि पर आधरित है तथा साक्षात्कार अनुसूची को संरचना करके प्राथमिक सनंको का संकलन किया गया है। सनंको का विश्लेषण सामान्य रूप से प्रचलित सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया है।

विमर्श

विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के उपरोक्त अनुभव यह स्पष्ट करते हैं कि किसी अर्थव्यवस्था के आर्थिक विकास को पूर्वापेक्षा कृषि क्षेत्र का विकास है। कृषि क्षेत्र का विकास कृषि एवं संबद्ध क्रियाओं में लगे लोगों की आर्थिक स्थिति में तो सुधार करता ही है, साथ–साथ यह गैर कृषि क्षेत्र के लिए खाद्यान्न, कच्चा पदार्थ, बाजार और श्रम शक्ति की आपूर्ति करता है। अर्थशास्त्रों जान्सटन और मेलर के अनुसार, कृषि उत्पादन आर्थिक विकास में 5 प्रकार से सहायक होता है।

1. आर्थिक विकास के साथ कृषि उत्पाद– विशेषकर खाद्यान्नों की मांग बढ़ती है। खाद्य पदार्थों की आपूर्ति में पर्याप्त वृद्धि न होने पर आर्थिक विकास में गंभीर गतिरोध उत्पन्न हो सकता है। कृषि क्षेत्र की इस दृष्टि से महत्वपूर्ण भूमिका है।
2. कृषि उत्पादों के निर्यात से विदेशो विनिमय की प्राप्ति होती है। आर्थिक विकास की प्रांरभिक अवस्था में विदेशो विनिमय की प्राप्ति अत्यधिक आवश्यक होती है।
3. नवीन औद्योगिक क्षेत्रों और इकाइयों के लिए श्रन शक्ति की प्राप्ति कृषि क्षेत्र से ही होती है।
4. विकास के प्राथमिक चरण में परिवहन एवं औद्योगिक विकास के लिए संसाधन आपूर्ति क्षेत्र कृषि क्षेत्र से ही होती है क्योंकि यह अथव्यवस्था का अग्रणी और प्रमुख क्षेत्र होता है।
5. ग्रामीण जनसंख्या की आय में वृद्धि होने पर औद्योगिक उत्पादनों की मांग बढ़ती है। मांग वृद्धि औद्योगिक क्रियाओं में प्रसार की अति प्रमुख प्रेरक शक्ति होती है।

कृषि विकास किसी अर्थव्यवस्था के समग्र आर्थिक विकास में कई रूपों में सहायक है। अतः कृषि क्षेत्र में विनियोग को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। विकास के आरंभिक चरण में कृषि विकास पर अधिक बल देने के लिए कुछ आर्थिक तर्क प्रस्तुत किये जाते हैं। आधारित तर्क यह है कि कृषि उत्पादन में वृद्धि अपेक्षाकृत कम पूंजी से किया जा सकता है। विनियोग और उत्पादन के मध्य समय अंतराल अत्यन्त कम होता है। विकासशील देशों में भुगतान संतुलन अधिकतर घाटे का रहता है। कृषि उत्पादन में वृद्धि इन देशों में आयात घटाने का सर्वप्रमुख साधन है। सामान्यतः यह देखा गया है कि विकसित देशों में शहरी क्षेत्र का प्रभुत्व बना रहता है जबकि आर्थिक दृष्टि से पिछड़े देशों में ग्रामीण क्षेत्र प्रधान होता है। भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्था की बागडोर ग्रामीण क्षेत्र को ही संभालनी होती है। इसी क्षेत्र में उन सब परिस्थितियों का निर्माण होता है जो सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में समर्थ होती है।

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को दो उप–क्षेत्रों मे बांटा जा सकता है–

(अ) कृषि क्षेत्र और (आ) गैर कृषि क्षेत्र। कृषि क्षेत्र में वे सभी लोग शामिल किये जाते हैं जिनके निर्वाह का साधन खेती–बाड़ी है, व गैर–कृषि क्षेत्र में अन्य सभी ग्रामीण समुदाय को शामिल किया जाता है। ग्रामीण अर्थव्यवसथा के इस स्वरूप को तालिका के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है–

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

(अ)	कृषि क्षेत्र	भूमि–श्रम–अनुपात	रोजगार का स्वरूप
(i)	बड़े किसान	भूमि–श्रम	प्रमुखतः नियोजक
(ii)	मध्यम किसान	भूमि–श्रम	अनियमित नियोजक
(iii)	छोटे किसान	भूमि–श्रम	अनियमित श्रमिक
(iv)	सीमांत किसान	भूमि–श्रम	प्रमुखत श्रमिक
(v)	भूमिहीन श्रमिक	मात्र श्रम	पूर्णतः श्रमिक
(आ)	गैर–कृषि क्षेत्र		
(i)	व्यापारी वर्ग		
(अ)	सामान्य वस्तुओं का व्यापार करने वाले		
(आ)	कृषि–आदानों का व्यापार करने वाले		
(ii)	दस्तकार		
(अ)	सामान्य सेवायें उपलब्ध करवाने वाले		
(आ)	कृषि–क्षेत्र की आवश्यकताएं पूरी करने वाले		

तालिका से स्पष्ट है कि ग्रामीण समुदाय में अनेक तरह के कार्य जुड़े हैं इनमें उत्पादन–साधन के रूप में प्रधान साधन भूमि है।

कृषि के व्यवसायीकरण के बारे में हमें इस बात से पता चलता है कि आज किसान मात्र अपनी ओर अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति के वास्ते ही फसलों का उत्पादन नहीं करता है। किसान अब सोच–समझकर उन फसलों को चुनता है जिन्हें बेचकर उसे अधिक पैसे प्राप्त होते हैं गेहूं धान, अथवा अन्न की कोई भी दूसरी फसल की खेती मात्र अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के वास्ते नहीं की जाती बल्कि उसे बाजार में बेचकर अधिक आय कमाने का प्रयास किया जाता है। व्यवसायीकरण के लिए जिम्मेदार प्रमुख कारण निम्नलिखित है:–

1. पिछले 40 वर्षों के दौरान कृषि के उत्पादन के तरीकों में महत्वपूर्ण सुधार हुए हैं, परिणामस्वरूप कृषि उत्पादकता पहले की तुलना में बहुत अधिक बढ़ चुकी है अतः किसान भूमि को मात्र निर्वाह का साधन न मान उससे अधिक से अधिक आय प्राप्त करना चाहता है।
2. कृषि उत्पादन में सुधार के लिए जिम्मेदार प्रमुख कारण है उन्नत टेक्नोलॉजी का प्रयोग, जिसमें हम शामिल कर सकते हैं उन्नत किस्म के बीज (HYV Seeds) उर्वरक, कीटाणुनाशक दवाइयां, सिंचाई आदि। इस टेक्नोलॉजी के प्रयोग के कारण (क) फसलों के पकने की अवधि कम हो गई है, तथा (ख) उन्नत कृषि आदानों को खरीदने के लिए किसान को नकद मुद्रा की आवश्यकता होती है। अतः आजकल किसान जल्दी से जल्दी अपनी फसल बाजार में बेचने को तैयार रहता है।
3. सड़कों और यातायात के साधनों के विकास से गांवों से दूर स्थित शहरी मण्डियों में जाना भी संभव हो पाया है।
4. नियंत्रित मण्डियों और सहकारिता एवं वाणिज्य बैंकों तथा अन्य संस्थाओं के विकास की वजह से यह भी संभव हो पाया है कि किसान अपने–आप को गांव के बनिये की जंजीरों से मुक्त करवा पाये। इस मुक्त वातावरण में वह बाजार के लिए अधिक उत्पादन करने के लिए प्रेरित होता है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

तालिका 1.जनपद इटावा में वर्तमान खण्डवार कृषि ऋण आपूर्ति सहकारी साख समिति द्वारा सन् 2000–01

विकास खण्ड	सदस्य की संख्या	अंशपूंजी (000 रू0)	कार्यशील पूंजी (000 रू0)	जमा धनराशि (000 रू0)	अल्पकालीन ऋण (000रू0)
1. जसवंतनगर	14025	1155	9616	325	4426
2. बढ़पुरा	1125	1212	9209	350	3223
3. बसरेहर	23526	3015	17650	450	9482
4. भरथना	14221	1050	924	610	3040
5. ताखा	10521	1225	7251	375	6570
6. महेवा	22320	2212	12569	601	6971
7. चकरनगर	10325	1021	8221	225	3444
8. सैंफई	12236	901	5285	321	908
योग ग्रामीण	108389	11790	70725	3257	3886
योग नगरीय	7045	605	4950	375	44467
योग जनपद	115434	127829	75675	3632	43337

तालिका नं0 2.जनपद इटावा में सहकारी बैंक तथा सहकारी कृषि एवं भूमि विकास बैंक 2000–01

क्र0 सं0	मद	जिला सहकारी बैंक	जिला भूमि विकास बैंक
1.	शाखायें संख्या	24	4
2.	सदस्य संख्या	591	24365
3.	हिस्सा पूंजी (000 रू0)	14999	6875
4.	क्रियाशील पूंजी (000 रू0)	330402	112269
1.	अल्पकालीन	49902	–
2.	मध्यकालीन	645	–
3.	दीर्घकालीन	–	27818

निष्कर्ष

भारतीय कृषि के परिवर्तित स्वरूप में, जहां आधुनिक शोध परिणामों का भरपूर प्रयोग किया जाता है तथा सीमित भूमि से सघन कृषि द्वारा अधिकाधिक उत्पादन प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, लघु सिंचाई योजना का अनुप्रयोग एक अपरिहार्य दशा बन चुकी है। जलवायु के बदलते वर्तुल के कारण प्रत्येक दो–तीन वर्षों में किसी न किसी प्राकृतिक विपदा (कभी अकाल तो कभी बाढ़) की आशंका बनी रहती है। दूसरी ओर जल स्तर निरंतर कम होता जा रहा है। इन सबको देखते हुए बूंद–बूंद पानी से कृषि उपज को प्राप्त करना हमारा ध्येय बन चुका है। लघु सिंचाई परियोजनायें ठीक इसी ध्येय की सफल प्राप्ति का मार्ग है। ग्रामीण जीवन में प्राकृतिक साधनों के संरक्षण की ओर सचेष्ट ध्यान देने से भी हमारा तात्पर्य यही है कि अन्य साधनों के साथ–साथ जल को भी व्यर्थता पूर्ण उपयोग से बचाया जाये ताकि हमारी कृषि उत्पादकता, पेय योग्य जल व वाटरशेडों के लिए इसका उपयोग हो सके। हरितक्रान्ति के बाद कृषि विकास की नवीन व्यूहरचना में जब में जब यंत्रीकरण हुआ, उन्नत बीजों का प्रयोग किया जाने लगा। उर्वरकों की खपत बढ़ी एवं वाणिज्यीकरण की ओर ध्यान गया तो खाद्यान्नों के साथ–साथ फल एवं सब्जियों के उत्पादन की ओर भी हमारा व्यवस्थित

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

ध्यान गया। 1970 के दशक में विपणन सुविधाओं के विकास कृषि जन्य वस्तुओं के प्रतिफल कुछ सीमा तक मिलने लगे। अतः यदि इन सब लाभों को बनाये रखना है और उनका समेकन करके इनमें और भी वृद्धि करनी है तो लघु सिंचाई योजनाओं का तीव्रगति से विकास करना होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. अग्रवाल ए0एन0–इण्डियन ऐग्रीकल्चर नेचर प्रॉब्लम्बस् एण्ड प्रोग्रेस "विकास पब्लिसिंग हाउस नई दिल्ली"।

[2]. अग्रवाल जी0डी0 बंसल पी0सी0– इकानामिक प्रॉब्लम्बस् ऑफ इण्डियन एग्रीकल्चर एण्ड "विकास पब्लिसिंग हाउस नई दिल्ली"।

[3]. अरोड़ा आर0सी0–उद्योग एवं ग्रामीण विकास 1978

[4]. अहमद एस बसीन–चेन्जिग इन प्रोडक्सन इन डिस्ट्रीब्यूसन ऑफ फ्रूड ग्रेन प्रोन्टिस् इन यू0पी0।

[5]. नारद्राज के–प्रोडक्सन कन्डीसन्स इन इण्डियन एग्रीकल्चर फ्रैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस 1974.

[6]. नाटिया बी0एम0–पावर्ट्री एग्रीकल्चर एण्ड इकोनामिक ग्रोथ विकास पब्लिसिंग हाउस नई दिल्ली।

[7]. नटनागर के0पी0 निगम, ए0आर0 एण्ड श्रीवास्तव जे0पी0एस0–इण्डियन रूलर इकोनोमिक किशोर पब्लिसिंग हाउस परेड कानपुर।

[8]. नट्टाचार्य जे0पी0–इन्डस्ट्रीज इन इण्डियन ऑफ एग्रीकल्चर इकोनोमिक बॉम्बे।

[9]. बिहारी विपिन–रूरल इन्डस्ट्री लाइजेशन इन इण्डिया विकास पब्लिसिंग हाउस नई दिल्ली।

[10]. नट्ट बी0बी0–कन्डीशन ऑफ एग्रीकल्चर ग्रोथ द इकोनोमिक ऑफ एग्रीकल्चर चेन्ज अण्डर पापुलेशन प्रेशर।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501